# विभक्तिः

११ – २८.११.२०१५

व्योम-संस्कृत-पाठशाला
www.sanskritfromhome.in

# मङ्गलम्

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमूः रामाय तस्मै नमः।
रामात् नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहम्
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर॥

व्योम-संस्कृत-पाठशाला ©2015। www.sanskritfromhome.in | www.vyomalabs.in |

# मङ्गलम्

गुरुरेव गतिः गुरुमेव भजे
गुरुणैव सहास्मि नमो गुरवे।
न गुरोः परमं शिशुरस्मि गुरोः
मतिरस्ति गुरौ मम पाहि गुरो॥

# पुनरावर्तनम्

- तृतीयाविभक्तिः
- साधकतमं करणम्
- कर्तरि तृतीया
- क्तवतु-प्रत्ययः
- क्त-प्रत्ययः

# पुनरावर्तनम् – क्तवतु-क्तप्रत्ययौ

## क्तवतु-प्रत्ययः

- कृत्-प्रत्ययः
- भूतकालार्थकः
- कर्त्रर्थकः
- लिङ्गत्रये रूपाणि
- कर्तुः लिङ्गं, वचनं, विभक्तिं च अनुसरति
- कर्तृपदं प्रथमाविभक्तौ
- कर्मपदं द्वितीयाविभक्तौ
- बालः पाठं पठितवान्/बालिका पाठं पठितवती

## क्त-प्रत्ययः

- कृत्-प्रत्ययः
- भूतकालार्थकः
- कर्मार्थकः
- लिङ्गत्रये रूपाणि
- कर्मणः लिङ्गं, वचनं, विभक्तिं च अनुसरति
- कर्तृपदं तृतीयाविभक्तौ
- कर्मपदं प्रथमाविभक्तौ
- बालेन पाठः पठितः/बालेन कथा पठिता

व्योम-संस्कृत-पाठशाला ©2015। www.sanskritfromhome.in | www.vyomalabs.in |

# कर्तरि तृतीया

- कर्मार्थक-प्रत्ययानां प्रयोगे कर्तुः तृतीया भवति।
- बालेन पाठः पठितः।
- बालेन पाठः पठनीयः।
- बालेन पाठः पठितव्यः।
- बालेन पाठः पठ्यते।

व्योम-संस्कृत-पाठशाला ©2015। www.sanskritfromhome.in | www.vyomalabs.in |

# अभ्यासः - १

| अहम् - पाठ | पठति | पठिष्यति | पठितवत् | पठित | पठनीय | पठितव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बालः - फलम् | खादति | खादिष्यति | खादितवत् | खादित | खादनीय | खादितव्य |
| देवी - मन्त्रः | जपति | जपिष्यति | जपितवत् | जपित | जपनीय | जपितव्य |
| भिक्षुकाः - भिक्षा | याचति | याचिष्यति | याचितवत् | याचित | याचनीय | याचितव्य |
| वयम् - ग्रामः | गच्छति | गमिष्यति | गतवत् | गत | गमनीय | गन्तव्य |
| पितामही - कथाः | कथयति | कथयिष्यति | कथितवत् | कथित | कथनीय | कथयितव्य |
| चोराः - सुवर्णम् | चोरयति | चोरयिष्यति | चोरितवत् | चोरित | चोरणीय | चोरयितव्य |
| त्वम् – घटी | ददाति | दास्यति | दत्तवत् | दत्त | दानीय | दातव्य |
| अश्वः - जलम् | पिबति | पास्यति | पीतवत् | पीत | पानीय | पातव्य |
| गायिकाः - गीतानि | गायति | गास्यति | गीतवत् | गीत | गानीय | गातव्य |

# अभ्यासः - २

| अहम् - पाठ | पठति | पठिष्यति | पठितवत् | पठित | पठनीय | पठितव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|
| गणेशः - कथा | लिखति | लेखिष्यति | लिखितवत् | लिखित | लेखनीय | लेखितव्य |
| गौरी - चित्राणि | पश्यति | द्रक्ष्यति | दृष्टवत् | दृष्ट | दर्शनीय | द्रष्टव्य |
| अहम् - वार्ता | शृणोति | श्रोष्यति | श्रुतवत् | श्रुत | श्रवणीय | श्रोतव्य |
| वृद्धः – युतकम् | धरति | धरिष्यति | धृतवत् | धृत | धरणीय | धर्तव्य |
| पाचकाः - तण्डुलाः | पचति | पक्ष्यति | पक्कवत् | पक्क | पचनीय | पक्तव्य |
| रामः - राक्षसाः | जयति | जेष्यति | जितवत् | जित | जयनीय | जेतव्य |
| छात्राः - लेखन्यः | क्रीणाति | क्रेष्यति | क्रीतवत् | क्रीत | क्रयणीय | क्रेतव्य |
| त्वम् - पुस्तकानि | नयति | नेष्यति | नीतवत् | नीत | नयनीय | नेतव्य |
| पुत्राः - अम्बा | स्मरति | स्मरिष्यति | स्मृतवत् | स्मृत | स्मरणीय | स्मर्तव्य |

# तृतीयाविभक्तिः

- करणवाचकम्। हस्तेन खादति।
- भाववाचकम्। कोपेन वदति।
- कर्तृवाचकम्। बालेन खादितम्।

# उपपदतृतीया - सह

- **रामेण** सह सीता वनं गतवती।
- **कृष्णेन** साकं अर्जुनः युद्धाय प्रस्थितवान्।
- **दुर्योधनेन** सार्धं कर्णः आगतवान्।
- **द्रौपद्या** समं सर्वे पाण्डवाः उपस्थिताः।
- अहमपि **त्वया** आगच्छामि।